रमेश मदान : जासूसी के लिए स्वर्ण पदक और ट्रॉफी

बटन, जिनमें टेपरिकॉर्डर से लेकर स्ट्रेस एनालाइजर हैं. तरह-तरह के कैमरों, लैंसों, बर्नाक्युलर और हजारों उपकरण.

'वह जो सामने रखा है वह बीफकेस नहीं, दरअसल टेपरिकॉर्डर है.'

'यह तो कोई किताब है'.

'खोलकर देखो.'

देखा तो मालूम पड़ा यह किताब नहीं है, उसमें तो तमाम उपकरण हैं. पेन जब तक किताब में लगा है, तब तक कुछ नहीं, लेकिन जैसे ही जेब में रखेंगे. वह आवाजें रिकॉर्ड करने लगेगा.

'यह लाइट है. अभी जल नहीं रही. जरूरत पडने पर इसका उपयोग किया जाता है. इस लाइट के फोकस में से होकर जो भी आदमी गुजरेगा और उसके शरीर की गर्मी लाइट की किरणों से जब टकरायेगी तो यह जलने लगेगी और सायरन बजने लगेगा.'

'यह इलेक्ट्रॉनिक गन है. ४०,००० वोल्ट करंट है इसमें, जबकि आम घरों में २४० वोल्ट करंट ही आता है.

इन सभी उपकरणों को जानने-समझने और देखने के लिए कम से कम एक दिन चाहिए.

'आप अपने घर में भी हथियारों से क्यों लैस रहते है?'

मदान बताते हैं: 'ये रासायनिक हथियार, लोडेड रिवॉल्वर, मल्टी परपज नाइफ (बहुउद्देशीय कटार) हथकड़ियां' भी मुझसे जुदा नहीं होते. दरअसल जासूसी में पैठ जितनी गहरी होती जाती है, जान के लिए खतरे उतने ही बढ़ते जाते हैं. मेरे ऊपर अभी तक तीन बार कातिलाना हमले हो चुके हैं. लाखौर (सहारनपुर) कांड जिसमें छह लोगों को फांसी के फंदे से बचाया था, की तहकीकात के दौरान तो मेरे दफ्तर में मुझ पर गोलियां चलायी गयीं.'

खतरों से खेलना मदान का कोई आज का शौक नहीं.यह तो बचपन से ही उनके स्वभाव का प्रमुख गुण था. अगर किसी ने बताया कि वहां भूत रहते हैं, उस भूत बंगले में मत जाना तो आठ-दस साल का रमेश उस बंगले में न जाये ऐसा कैसे हो सकता था.हर बात की सच्चाई जानने और मामले की तह तक पहुंचने की आदत के ही कारण एक दिन दस वर्षीय रमेश नहर के किनारे झाड़ियों के बीच खड़े दरख्त के पास रात के दस-ग्यारह बजे पहुंचा. कहा जाता था कि वहा एक बहुत बड़ा कोबरा नाग रहता है. दरख्त के पास बहुत बड़ा खजाना गड़ा है और वह नाग उस खजाने की रखवाली करता है. वह चमकता भी है. मदान बताते हैं, 'मैं सारा दिन इसी उधेड़बुन में रहा कि जमीन पर खड़ा रहूंगा तो नाग काट लेगा. भागूंगा तो वह मेरा पीछा करेगा. इसीलिए मैंने दिन में ही उस पेड़ की तलाश की जो नदी के किनारे पर था और जहां उस नाग को देखा जा सकता था. रात के ग्यारह-साढ़े ग्यारह बज गये, फिर बारह भी बजे. मैं सुनसान अंधेरे में पेड़ पर टकटकी लगाये देखता रहा कि शायद नाग अब आये.

इसी तरह एम.बी.बी.एस. डॉक्टर और मांटगुमरी (अब पश्चिमी पाकिस्तान) **मैं** मेयर **एच.सी.मदान** का बेटा रमेश अपनी शरारतों से औरों की नाक में दम कर देता, लेकिन किसी की क्या मजाल कि कोई चूं भी करे. आखिर मेयर का बेटा था. आठ-नौ वर्षीय रमेश सब बच्चों का रिंग लीडर बनकर किसी को भेड़ किसी को बकरी, किसी को शेर बनाता और एक बड़े से टब में सबको पानी पीने का आदेश देता. जब सब पानी पीने लगते तो शान से कहता, 'देखो शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पी रहे हैं.' कभी रमेश पावर हाऊस बनाने की योजना बनाता कि यहां से नहर आयेगी, यहां कुंआ खोदा जायेगा, यहां बिजली बनेगी.

बस ऐसे ही शरारतें करते और पढ़ते-लिखते दिन गुजर रहे थे कि सन् १९४६ में ग्यारह वर्षीय बालक रमेश और उसके तीन भाई-बहनों के सिर से मां का साया उठ गया. पिता ने दूसरी शादी कर ली. एक साल नहीं हुआ था कि रमेश के पिता की भी मृत्यु हो गयी. सौतेली मां ने रमेश और उसके बहन-भाइयों को घर से निकाल दिया. ये दिल्ली पहुंचे. तीनों भाई बहनों का पेट भरने की जिम्मेदारी रमेश पर आ गयी, क्योंकि वही सब में बडा था. नन्हा-सा रमेश कभी गुब्बारे बेचता, तो कभी सिनेमाघर के गेट पर टिकटें बेचता, कभी अखबार बेचता, कभी उसने मोटर मैकेनिक का काम किया, तो कभी बिजली या जूतों की दूकान पर काम किया, लेकिन इससे सबका गुजारा नहीं चलता था.तेरह वर्षीय रमेश ने सोचा कि क्यों न रिक्शा चालाऊं, लेकिन रिक्शे के लिए पैसा चाहिए और पैसा पास में था नहीं. अब उसे तरकीब सूझी. उसने रिक्शे के मालिक के पास छोटे भाई को गिरवी रखा. जितनी देर रिक्शा चलाता उतनी देर भाई रिक्शा मालिक के पास बैठा रहता. स्वाभिमानी रमेश को किसी रिश्तेदार से भीख लेना कतई मंजूर नहीं था.

रिश्तेदारों को यह बात कहते हुए सुना कि सौतेली मां ने सारा पैसा मार लिया और बच्चों को बेघर कर दिया. पंद्रह वर्षीय रमेश ने देवानंद और सुरैया की एक फिल्म देखी, जिसमें अदालत का दृश्य था और एक

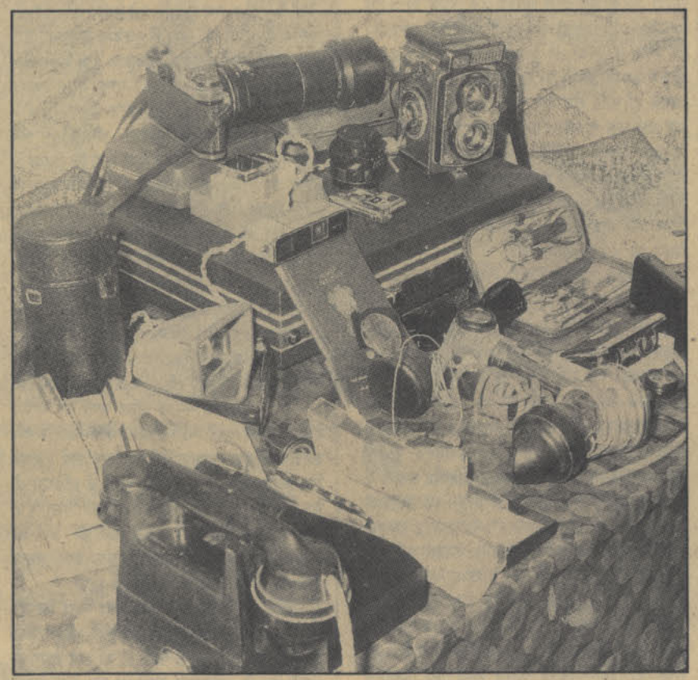

जासूसी में मददगार रमेश मदान के कुछ उपकरण.

सरकारी वकील दिखाया गया था. अब तो रमेश ने किसी वकील की तलाश शुरू कर दी. बहरलाल रमेश की मुलाकात एक वकील से हुई और उसने उन्हें अपनी सारी कहानी सुनायी. वकील साहब ने कहानी सुनने के बाद कहा– 'तुम्हें मालूम है कि मुकदमा लडने के लिए पैसा चाहिए.' रमेश के पास पैसा तो नहीं था. इसकी एवज में वह वकील साहब के यहां चपरासी का काम करने के लिए तैयार हो गया. इस लड़के की लगन और मेहनत देखकर एक दिन वकील साहब का दिल पसीजा और उन्होंने केस के सिलसिले में उनकी जायदाद के कुछ दस्तावेज और सबूत मांगे. ताकि मुकदमा लड़ा जा सके. मुश्किल यह थी कि जायदाद के सारे दस्तावेज सौतेली मां के कब्जे में थे, रमेश ने वह कागजात हासिल करने की ठान ली और अपने बहन भाइयों को किसी परिचित के यहां छोड़कर वह अपनी सौतेली मां के घर पहुंचा. उसे मालूम था किस कमरे में किस बक्से में दस्तावेज रखे हैं. रात के समय जब सभी लोग नीचे सो रहे थे रमेश चुपचाप ऊपर गया, कमरे का शीशा तोड़कर जरूरी कागजात चुपचाप निकाले और भाग आया. रमेश के कारनामे और उन कागजों को देखकर वकील साहब हैरान रह गये और उन्होंने अपने मुवक्किलों के सामने कहा 'यह लड़का मुकदमा जरूर जीतेगा.'

इसके बाद तो वकील साहब ने जज से भी लड़के की होशियारी के बारे में बताया. रमेश की अब खूब पूछ होने लगी. वकील साहब अपने मुवक्किलों से कहते कि सबूत आदि हासिल करने के लिए वे लड़के से मिलें. इस तरह हर मुवक्किल से २५ रुपये की फीस लेकर रमेश उनके लिए सबूत हासिल करने का काम करने लगा. इधर उसने अपनी पढ़ाई भी लगातार जारी रखी. अपने एक पहलवान दोस्त के साथ उसने कसरत और पहलवानी भी सीख ली. अब तो तेज दिमाग, लगन और मेहनत के साथ-साथ ताकत उसके लिए सोने में सुहागा साबित हुई.

यें भी जासूसी का हिस्सा है.

जासूसी ने निर्दोषों को मौत के जबड़े से खींच निकाला

फरवरी, १९७३ में उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले के लाखौर गांव के एक कुंए में **आशाराम** की लाश पायी गयी. उसके शरीर पर ४२ घाव थे और भेजा बाहर आ गया था. इस हत्या के इल्जाम में एक ही परिवार के छह लोगों को गिरफ्तार कर उन पर दफा ३०२ के तहत मुकदमा चलाया गया. जाहिर है छहों को फंसी की सजा होती, लेकिन उसी परिवार का एक सदस्य, जो हत्या वाले दिन गांव में नहीं था, बच गया. वह **रमेश मदान** के पास आया और पूरी घटना सुनाते हुए कहा कि वे छहों निर्दोष हैं. मदान बिना किसी तहकीकात के कैसे मान लेते कि वे निर्दोष हैं. तहकीकात के दौरान उन्होंने पाया कि सचमुच वे छहों निर्दोष हैं.

अब शुरू हुआ आगे की छानबीन का काम. मदान और उनके जासूस वेश बदलकर सबूत और गवाह इकट्ठे करने में जुट गये. लंबी छानबीन के दौरान उन्होंने विभिन्न लोगों की बातचीत के २३ कैसेट्स रिकार्ड किये. इन कैसेटों में गांववालों और पुलिस अफसरों की बातचीत रिकार्ड थी. इन कैसेटों ने अदालत में पुलिस द्वारा दर्ज की गयी कहानी से बिल्कुल अलग ही कहानी बयान की, जिसके अनुसार क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी ने पाच हजार रुपये के लालच में हत्यारों का साथ दिया था. योजना के अनुसार आशाराम, जिसकी रंजिश इस परिवार के रात लोगों से थी, का कत्ल कर लाश हुए में फेंक दी गयी और थानेदार की मिलीभगत से उस परिवार के छह लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया. थानेदार ने अदालत में झूठे सबूत और गवाह पेश किये. वही थानेदार किसी तरह मदान की गिरफ्त में आ गया. मदान ने चोरी-छिपे उसकी बातचीत के कई कैसेट रिकार्ड किये. चूंकि थानेदार को इस काम का पूरा पैसा नहीं मिला था,इसलिए वह कुछ भड़का हुआ था और अपने साथियों से अक्सर यही बात करता मिल जाता था.

कई महीने किसी देहाती आदमी के हुलिये में मदान लाखौर गांव की खाक छानते रहे और आखिर में सत्र न्यायाधीश **एस.के. जैन** की अदालत में सुनवाई वाले दिन सारे सबूतों के साथ हाजिर हो गये. इस तरह छह निर्दोष लोगों को उन्होंने फांसी के फंदे से बचा लिया. यह बात अलग है कि इस केस के दौरान मदान पर उनके ऑफिस में गोलियां चलायीं गयीं, लेकिन हमेशा की तरह वह बच गये.

रमेश मदान ने सौतेली मां से वह मुकदमा जीत लिया, और उन्हें जायदाद मिल गयी. यहीं से शुरू हुआ मदान की जासूसी का सिलसिला. उन्हें नाटकों और गाने का शौक था तो नाटक आदि भी खूब किये. सन् १९५४ में मदान दिल्ली आये और सन् १९५८ में राजेंद्र नगर में 'गोलिएथ डिटेक्टिव कंपनी' शुरू कर दी.

बाद में मदान ने न्यूयॉर्क में 'इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंसेज' में ग्रैजुएशन किया. यहीं पर उन्होंने पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट, फिंगर प्रिंट्स, फुट प्रिंट, बैलेस्टिक, हैंडराइटिंग, टाइप राइटिंग का प्रशिक्षण लिया.

आज मदान की डिटेक्टिव एजेंसी भारत की एक प्रतिष्ठित एजेंसी है. देश भर में इसकी ग्यारह शाखाएं हैं, जिनमें ५०० लडके और १३० लड़कियां जासूसी. का काम करते हैं. इस तरह देश भर में मदान के जासूसों का जाल फैला हुआ है. २५ रुपये की फीस से जासूसी शुरू करने वाले मदान की फीस आज हजारों में है. यह फीस चालीस-पचास हजार से लेकर पांच सौ रुपये तक भी हो सकती है. यह केस पर निर्भर करता है. अन्य जासूसी एजेंसियां जहां हत्या के मामले लेने से कतराती हैं, वहीं मदान को हर संगीन मामला एक नयी खुराक जैसा लगता है.

आप अपनी जिंदगी के बारे में सोचते हैं तो कैसा लगता है? इस सवाल के जवाब में मदान मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं, 'कभी-कभी यकीन नहीं होता कि वह बच्चा मैं ही हूं. दिमाग में जैसे एक फिल्म सी चलने लगती है. मैं सोचता हूं, मैं भी कितना ढीठ हूं. भगवान भी यही सोचता होगा कि मैंने तुझे हराने की लाख कोशिशें कीं 'लेकिन तू'.... और कमरे में रखे उपकरणों से मदान की संजीदा आवाज टकराती है. इस बार यह संजीदा आवाज और हल्की हंसी ठहाके में बदल जाती है.

'सच कुदरत ने ठोकर देकर मुझे तराशा और हालात ने मुझे जासूस बना दिया.'

अपनी उम्र से काफी कम उम्र का दिखाई देने का राज वे बताते हैं– 'संयम, दृढ़ निश्चय, इच्छा शक्ति और खुश रहना.' अभिनय, गायन और लगभग बाईस छोटे-बडे व्यवसायों ने मदान के जासूसी व्यक्तित्व को और भी बहुआयामी बनाया है. पेन और चाबी के गुच्छों का उनके पास अच्छा खासा संग्रह है. अकेले बैठे-बैठे योजनाएं बनाते रहना और किसी भी जगह का खाका खींचना उन्हें बेहद पसंद है, ज्यादा भीड़-भाड़, रिश्तेदारी, पार्टी या मौत पर जाना उन्हें बिल्कुल अच्छा नहीं लगता.

'किसी की मौत पर जाता हूं तो अपना अतीत याद आने लगता है. मेरे आंसू आने लगते हैं.' अपने आपको 'स्टोन हार्टेड' (पत्थर दिल) कहनेवाले मदान की पत्नी **श्रीमती डॉक्टर प्रमिला मदान** अगर उन्हें सॉफ्ट हार्टेड' (कोमल दिल वाला) कहती हैं तो गलत नहीं कहतीं.

• विनीता गुप्ता